प्रधान मंत्री (श्री एच.डी. देवेगौड़ा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सभा में आपके द्वारा प्रस्तुत किए गये शोक संबंधी संकल्प से अपने आपको संबद्ध करते हुए आज डा. नीलम संजीव रेड्डी को श्रद्धांजली अर्पित करने वाले प्रस्ताव से स्वयं को संबद्ध करना मेरा दुःखद कर्तव्य है।

डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन से देश ने एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, एक सुयोग्य प्रशासक, एक स्वच्छ छवि वाले राजनीतिज्ञ और एक वरिष्ठ देशभक्त खो दिया है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महात्मा गांधी के आह्वाहन पर उन्होंने उच्च शिक्षा सहित अपना सभी कुछ बलिदान कर दिया था और अपने प्रारंभिक युवा काल में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और कई वर्षों तक जेल में रहे। वे किसान परिवार से संबद्ध थे। अपने बलिदान, कठोर परिश्रम और गुणों के आधार पर, वे आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री बने। मुख्य मंत्री के रूप में, उन्होंने कई परियोजनाएं प्रारम्भ की जिनसे बाद में कृषि का चहुमुखी विकास हुआ। वे केवल एक प्रगतिशील प्रशासक ही नहीं थे बल्कि एक असाधारण रूप से संवेदनशील राजनीतिज्ञ थे। वे एक राजनेता थे और सार्वजनिक जीवन में उच्च स्तरों से प्रतिबद्ध थे।

उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य करके देश की सेवा की। सर्वप्रथम वे मद्रास विधान सभा के सदस्य बने। तत्पश्चात् वे भारत को संविधान सभा के सदस्य बने। बाद में वे आंध्र प्रदेश के मंत्री तथा मुख्य मंत्री बने। वे श्री लाल बहादुर शास्त्री के मंत्रिमंडल में और बाद में श्रीमती इन्दिरा गांधी के मंत्रिमंडल के सदस्य थे। एक योग्य प्रशासक के रूप में, उन्होंने केन्द्र सरकार में कई मंत्रालयों को परिपक्व मार्ग दर्शन दिया। संसदीय कौशल के कारण ही उन्हें चौथी लोक सभा का अध्यक्ष चुना गया था। जिस पद पर उनको व्यापक प्रशंसा मिली। उनकी प्रतिभा के कारण ही वे मार्च, 1977 में पुनः सर्वसम्मति से लोक सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और फिर देश के सर्वोच्च पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

मुझे उनको कई वर्षों तक निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उनके अंतिम वर्षों के दौरान, जब वे बंगलौर रहने लगे, तो भी मुझे उनके निकट सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। आज जब मैं उनके बारे में बात करता हूं तो, उनके साथ मेरी संबद्धता की कई यादें दिमाग में आ रही हैं। उनके जाने से भारत के सार्वजनिक जीवन को क्षति हुई है, लेकिन वे सदैव हम सभी के लिए सार्वजनिक जीवन का एक अनुकरणीय उदाहरण रहेंगे।

मैं हमारे कुछ निवर्तमान साथियों के निधन पर भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं।

श्री राम चरण चौधी लोक सभा के सदस्य थे, जिनकी सामाजिक कार्य और दलितों के उत्थान में विशेष रूचि थी।

श्री वाल्मीकि चौधरी हमारे प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के साथ अपनी निकट संबद्धता के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने डा. राजेन्द्र प्रसाद से संबंधित दस्तावेजों को एकत्रित करके और उनका संकलन करके देश की महत्वपूर्ण सेवा की है।

हम श्री डी.डी. पुरी, श्री पी.ए. एंटनी और श्री विजय पाल सिंह के निधन पर भी शोक व्यक्त करते हैं। श्री पुरी किसानों और चीनी उद्योग के हितों से निकट रूप से संबद्ध थे, श्री पी.ए. एंटनी एक बुद्धिजीवी और एक प्रतिष्ठित खिलाड़ी थे।

श्री विजय पाल सिंह की श्रमिक वर्ग, किसानों और युवा वर्ग में विशेष रूचि थी और वे उनके कल्याण के प्रति समर्पित थे।

मैं डा. नीलम संजीव रेड्डी और अन्य दिवंगत साथियों के निधन पर राष्ट्र द्वारा और हम सभी द्वारा महसूस की गई व्यक्तिगत क्षति और शोक व्यक्त करता हूं। भगवान उनकी आत्माओं को शांति प्रदान करे।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (लखनऊ) : अध्यक्ष महोदय, नए सदस्यों का शुभागमन और दिवंगत सदस्यों का पुण्य-स्मरण कुछ क्षणों के अन्तर से घटने वाली दो घटनाएं इस सदन की पूरी कहानी कह देती हैं, जीवन की भी पूरी कहानी कह देती है।

डा. नीलम संजीव रेड्डी के निधन से एक युग का अन्त हो गया। वर्तमान को अतीत से जोड़ने वाली एक सशक्त कड़ी टूट गई है। एक महारथी हमारी बीच में से उठ गया। वे गांव में जन्मे, किसान के घर पले, स्वतंत्रता से संग्राम में जूझे। कई बार जेल गए और जब देश स्वतंत्र हो गया तो राष्ट्र के निर्माण में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे विधान सभा में रहे, संविधान परिषद के सदस्य थे जैसा अभी कहा गया। लोक सभा में रहे, राज्य सभा में रहे। हर जगह उन्होंने अपनी छाप छोड़ी। उनकी खुरदरी काया के भीतर एक स्नेहपूर्ण हृदय निवास करता था। दो बार वे लोक सभा के अध्यक्ष रहे। मैं एक बार प्रतिपक्ष में था, एक बार सत्ता पक्ष में था। सदन को नियंत्रित करने के लिए वे संविधान, नियमावली, परम्पराएं, इसका ज्यादा सहारा नहीं लेते थे। यद्यपि वे सबसे भली-भांति परिचित थे लेकिन सहज बुद्धि से, अपनी कुशलता से, सबको साथ लेकर चलने की कला से उन्होंने स्पीकर के नाते अपना योगदान दिया।

यह ठीक है कि उनकी गणना विट्ठल भाई पटेल या मावलंकर जी की तुलना में नहीं हो सकती, लेकिन सब का सहयोग लेकर सदन किस तरह से चलाया जा सकता है, यह उनके कार्यकाल में हमने देखा।

मुझे उनके साथ विदेश जाने का भी मौका मिला। एक बार एक देश में हमारे प्रतिनिधि-मंडल के शिष्टाचार में थोड़ी कमी रह गई।